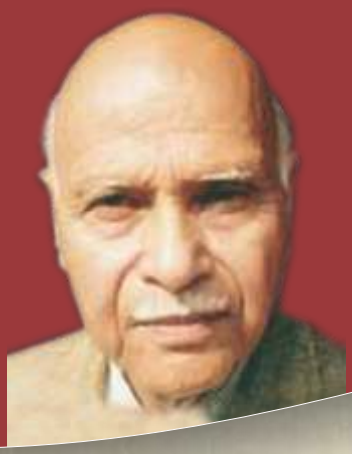

SHRI NARSINGH DEV JAMWAL

Shri Narsingh Dev Jamwal, a multi-media Artist and a prolific writer holds a respectable niche in the history of Dogri literature. He can craft a play, spin a tale and compose a poem with equal grace and adeptness. A writer with a dynamic thrust, daring stance and versatile pen, he ranks high among the literary pioneers with whom Dogri literature came of age.

2. Born on February 28, 1931 Shri Jamwal passed his matriculation from Punjab University Lahore(1945).Realising no scope for further education, he first joined J&K State Forces, took part in Indo-Pak War, 1947 at Ghari-Muzaffrabad under Brig. Rajinder Singh MVC. He remained Prisoner of War (1948-50), left Army in 1950 and later on joined J&K State Police in 1953 and retired as Deputy Superintendent of Police in 1986 after 32 years meritorious service and President's Police Medal to his credit.

3. While in Police service Shri Jamwal not only fulfilled his desire of higher education; Honors in Dogri,1969 (1st Position) and B.A in 1971 from J&K University, M.A. and Pre Ph.D. in Dogri from Jammu University, but also entered the field of Fine Arts and then as a writer and a theaterist in earlier sixties of 20th century as well. On this journey he like a sincere worker or a committed soldier through out, never looking back, tried his best to achieve goal after goal and set new records. Besides his published works, he has also contributed about 90 Radio Plays, half a dozen T.V Serials for DDK Jammu/Kashmir, his Stage Plays have been and are being Staged in and outside the State, making his person quite familiar to listeners/viewers. Translations of his writings appeared in the leading Magazines/journals of different Indian languages.

4. Shri Jamwal published works comprise 9 books of poetry, 4 short stories collections, 3 Novels, 18 Stage/Radio Plays, 4 collections of Literary and other Essays, 3 books of Children Literature, one (poems/Short Stories/Short Play) based on one theme i.e 1965 Indo-Pak War and one Autobiography(640pages), a total of 43 Books till date. He compiled/translated 3 books into Dogri, assigned by Sahitya Akademi, and one by J&K State Academy. Also, "The representative Dogri Poems of N.D Jamwal introduced and translated into English by Dr.Lakshmi Narain Sharma (CANADA) published in 1997, whereas Monograph of N.D Jamwal (in Dogri) by Dr.Om Goswami has been published by the J&K State Academy.

5. Shri Jamwal is the recipient of numerous awards and honours. His awards include Sahitya Akademi Award 1978, SA Award for Translation 2018, Sangeet Natak Akademi Award 2008, Akashvani New Delhi Award 1965(Lyric Writing), Radio Play Scripts 1990 and 1993, 50 Years of India's Independent Award, 1997 J&K State; Gold Medal with cash prize of Rs. One Lakh, Life Time Achievement Award 2014 J&K State: Gold Medal with Rs Fifty thousand for Performing Art, J&K Accession Golden Jubilee Award at New Delhi by Dr.Karan Singh ji. BIG DUGGAR Award (People's Choice) 2016 by FM Radio 92.7, J&K-Punjab Sector. Duggar Ratna (15 August, 2018) by JK Channel, J&K State Academy's Best Book Award (5 Times), Best Play Script Award (3 Times), Robe of Honour by Syed Mir Qasim the then Chief Minister during a Writer's Conference organized by Reasti Cultural Sangam.'A Face in the crowd' produced and telecasted from DD-1 New Delhi 1991. The Great Masters- N.D. Jamwal, a documentary by NZCC Patiala, 'Dogri de Stambh-N.D. Jamwal and 2 other documentaries on his life and works, telecasted from DDK Jammu. Presently, he has been member of General Council J&K State Academy, J&K Paryavaran Sanstha Jammu, State/Indian Ex-Services League (Dual Membership), J&K Police Welfare Association, Bhartiya Kala Sangam Jammu, Master Sansar Chand Trust (Fine Arts) and Lalit Kala Akademi, New Delhi etc.

पद्म श्री



श्री नरसिंह देव जम्वाल

श्री नरसिंह देव जम्वाल एक मल्टी मीडिया कलाकार तथा मुखर लेखक हैं। आपका डोगरी साहित्य के इतिहास में सम्मानजनक स्थान है। आप एक समान कुशलता और निपुणता से नाटक की रचना कर सकते हैं, कहानी और कविता लिख सकते हैं। प्रभावशाली व्यक्तित्व, निर्भीक दृष्टिकोण तथा बहुआयामी लेखनी से सम्पन्न लेखक के रूप में आपका स्थान उन अग्रणी साहित्यिकारों में सबसे ऊपर है जिनके साथ डोगरी साहित्य पराकाष्ठा तक पहुंचा है।

2. आपका जन्म दिनांक 28 फरवरी, 1931 को हुआ। आपने 1945 में पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। आगे की पढ़ाई की कोई गुंजाइश न देखते हुए आप सर्वप्रथम जम्मू और कश्मीर राज्य पुलिस में भर्ती हुए। ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिह एमवीसी के अधीन घारी-मुजफ्फराबाद में भारत-पाक युद्ध, 1947 में हिस्सा लिया। आप युद्ध बंदी रहे (1948-50), आपने 1950 में सेना छोड़ दी और उसके बाद वर्ष 1953 में जम्मू और कश्मीर राज्य पुलिस में शामिल हुए तथा 32 वर्षों की सराहनीय सेवा के बाद वर्ष 1986 में उप पुलिस अधीक्षक के रूप में सेवानिवृत्त हुए। आपको राष्ट्रपति का पुलिस मेडल भी प्राप्त हुआ है।

3. पुलिस सेवा में रहते हुए आपने न केवल उच्चतर शिक्षा की अपनी इच्छा पूरी की; वर्ष 1969 में जम्मू और कश्मीर विश्वविद्यालय से डोगरी में ऑनर्स (प्रथम स्थान) तथा वर्ष 1971 में कला स्नातक, जम्मू विश्वविद्यालय से डोगरी में एम.ए. और प्री-पीएच.डी. की डिग्री हासिल की, बल्कि ललित कला के क्षेत्र में और उसके बाद बीसवीं शताब्दी के 60 के दशक के आरंभिक वर्षों में लेखक और रंगकर्मी के रूप में कार्य किया। इस यात्रा में आपने पूरी तरह एक निष्ठावान कार्यकर्ता या प्रतिबद्ध सिपाही के रूप में कार्य किया, आपने कभी वापस मुड़कर नहीं देखा, एक के बाद एक लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास किया तथा नए कीर्तिमान स्थापित किए। अपनी प्रकाशित कृतियों के अलावा आपने डीडीके जम्मू/कश्मीर के लिए लगभग 90 रेडियो नाटक, आधे दर्जन टीवी धारावाहिक भी बनाए हैं। आपके नाटकों का मंचन राज्य में और राज्य के बाहर किया गया है और किया जा रहा है। आपके किरदार श्रोताओं/दर्शकों से काफी मिलते-जुलते हैं। आपकी कृतियों के अनुवाद विभिन्न भारतीय भाषाओं की प्रमुख पत्रिकाओं/जर्नलों में प्रकाशित हुए हैं।

4. आपकी प्रकाशित कृतियों में कविताओं की नौ पुस्तकें, 4 लघु कथा संग्रह, 3 उपन्यास, 18 मंच/रेडियो नाटक, 4 साहित्यिक और निबंध संग्रह, 3 बाल साहित्य पुस्तकें, वर्ष 1965 के भारत-पाक युद्ध विषय पर आधारित एक (कविता/लघु कथा/लघु नाटक) तथा एक आत्मकथा (640 पृष्ठ) अर्थात् अब तक कुल 43 पुस्तकें शामिल हैं। आपने साहित्य अकादमी द्वारा सुपुर्द 3 पुस्तकों तथा जम्मू और कश्मीर राज्य अकादमी द्वारा सुपुर्द एक पुस्तक को डोगरी में संकलित/अनूदित किया। साथ ही, डॉ. लक्ष्मी नारायण शर्मा (कनाडा) द्वारा आपकी प्रमुख डोगरी कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद वर्ष 1997 में प्रकाशित हुआ जबकि डॉ. ओम गोस्वामी द्वारा आपका विशेष लेख (डोगरी में) जम्मू और कश्मीर राज्य अकादमी ने प्रकाशित किया है।

5. आपको कई पुरस्कारों और सम्मानों से नवाज़ा गया है। आपको मिले पुरस्कारों में साहित्य अकादमी पुरस्कार 1978, अनुवाद के लिए एस ए पुरस्कार, 2018, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार 2008, आकाशवाणी, नई दिल्ली पुरस्कार, 1965 (गीत लेखन), रेडियो नाटक पटकथा 1990 और 1993, भारत की स्वतंत्रता का पचास वर्ष पुरस्कार 1997, जम्मू और कश्मीर राज्य : एक लाख नकद पुरस्कार के साथ स्वर्ण पदक, लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार, 2014, जम्मू और कश्मीर राज्य : कला प्रदर्शन के लिए 50,000 रुपए के साथ स्वर्ण पदक, डॉ. कर्ण सिंह जी द्वारा नई दिल्ली में जम्मू और कश्मीर एक्सेशन गोल्डन जुबली पुरस्कार, एफ एम श्रेडियो 92.7, जम्मू और कश्मीर – पंजाब सेक्टर द्वारा बिग डुग्गर पुरस्कार (पीपल्स च्वाइस), जम्मू और कश्मीर चैनल द्वारा डुग्गर रत्न (15 अगस्त, 2018), जम्मू और कश्मीर राज्य अकादमी का सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पुरस्कार (5 बार), सर्वश्रेष्ठ नाटक पटकथा पुरस्कार (3 बार), रियासती कल्चरल संगम द्वारा आयोजित लेखक सम्मेलन के दौरान तत्कालीन मुख्यमंत्री सैयद मीर कासिम द्वारा रोब ऑफ ऑनर शामिल हैं। 'ए फेस इन द क्राउड' डीडी-1 नई दिल्ली द्वारा वर्ष 1991 में तैयार किया गया और प्रसारित किया गया। एनजेडसीसी पटियाला द्वारा बनाया गया द ग्रेट मास्टर्स-एन.डी. जम्वाल नामक एक वृत्तचित्र, 'डोगरी दे स्तम्भ - एन.डी. जम्वाल तथा आपके जीवन एवं कृतियों पर दो अन्य वृत्तचित्र डी डी के जम्मू से प्रसारित किए गए। वर्तमान में, आप जनरल कौंसिल जम्मू और कश्मीर राज्य अकादमी, जम्मू और कश्मीर पर्यावरण संस्था जम्मू, स्टेट/इंडियन एक्स सर्विसेस लीग (द्वय सदस्यता), जम्मू और कश्मीर पुलिस वेल्फेयर एसोसिएशन, भारतीय कला संगम जम्मू, मास्टर संसार चंद ट्रस्ट (ललित कला) तथा ललित कला अकादमी, नई दिल्ली आदि के सदस्य हैं।